शिशुपालबध के प्रथम सर्ग की कथा

नारद जी का आकाश से नीचे उतरना—एक बार द्वारिका में अपने भवन में बैठे हुए लक्ष्मीपति श्रीकृष्णजी ने मुञ्ज की मेखला, मृगचर्म, यज्ञोपवीत और रुद्राक्षमाला को धारण किये हुए तथा महती नाम की अपनी वीणा को बजाते हुए जटाधारी एवं तेजपुञ्ज नारद जी को आकाश से नीचे उतरते हुए देखा। द्वारिका के लोग सोचने लगे कि नीचे की ओर उतरता हुआ यह तेजपुञ्ज क्या है ? यह सूर्य नहीं हो सकता क्योंकि सूर्य तो पूर्व से पश्चिम की ओर जाता है। यह अग्नि भी नहीं हो सकती क्योंकि अग्नि तो ऊपर की ओर जलती है। भगवान् श्रीकृष्ण ने पहले तो उस गिरती हुई चीज को एक तेजपुञ्ज समझा। जब निकटता के कारण आकृति लक्षित होने लगी तब "कोई प्राणी है" ऐसा निश्चय किया। अङ्गों के स्पष्ट दृष्टिगोचर होने पर "यह कोई पुरुष है" ऐसा समझा और अन्त में उन्हें नारद के रूप में जाना। कृष्णभवन के समीप में आने पर नारद जी ने स्वर्ग से अपने पीछे-पीछे आते हुए देवताओं को लौटा दिया और स्वयं कृष्ण-भवन में प्रवेश किया।

श्रीकृष्ण जी के द्वारा नारद का सत्कार तथा उनके आगमन का कारण पूछना—महामुनि नारद भूमि पर स्थित भी नहीं हो पाये थे कि श्रीकृष्ण जी उनके स्वागत के हेतु अपने उच्च आसन से वेगपूर्वक उठ खड़े हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्घ्य आदि पूजन-सामग्रियों से नारद जी की विधि-पूर्वक पूजा की और अपने हाथ से दिए हुए आसन पर उनको बैठाया। उच्च आसनों पर बैठे हुए श्यामवर्ण श्रीकृष्ण जी और गौरवर्ण नारद जी उस समय अत्यधिक शोभायमान हो रहे थे। मुनि नारद की पूजा करके श्रीकृष्ण जी अत्यधिक हर्षित हुए तथा नारद द्वारा सभी तीर्थों से लाए गए एवं कमण्डलु से निकाल कर छिड़के गए जल को श्रीकृष्ण ने अवनत मस्तक से ग्रहण किया। तत्पश्चात् स्निग्ध दृष्टि से नारद जी की ओर देखते हुए श्रीकृष्ण जी मन्द मुस्कान युक्त वचन बोले—"हे महामुनि ! यद्यपि आपके दर्शन से ही मैं कृतार्थ हो गया हूँ तथापि मेरे आत्मगौरव को बढ़ानेवाला आपका सराहनीय आगमन ही मुझे यह पूछने के लिए प्रेरित कर रहा है कि आप अपने आने के उद्देश्य को कहें"।

नारद जी का उत्तर—नारद जी ने भगवान् श्रीकृष्ण की अनेक प्रकार की स्तुति करके अपने आगमन का कारण इस प्रकार कहा—"हे हरि ! दुष्टों का नाश करके पृथ्वी का भार हल्का करने के लिए आपने इस पृथ्वी पर अवतार ग्रहण किया है। यद्यपि आप स्वयं (बिना किसी निवेदन) के ही दुष्टों का विनाश करने में लगे हुए हैं तथापि आप के साथ बातचीत करने के लिए लालची मेरा मन मुझे वाचाल बना रहा है। पृथ्वी का भार हल्का करने के विषय में मैं इन्द्र का सन्देश लेकर आया हूँ। कृपया आप उस संदेश को सुनें—

"प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नामक एक बड़ा शूर और भयंकर असुर हुआ, जिसने अपने पराक्रम से सभी देवताओं को अपने वश में कर लिया था। नृसिंहावतार धारण करके आपने उसका वध किया। वही असुर दूसरे जन्म में रावण के रूप में उत्पन्न हुआ। इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, वायु इत्यादि सभी देवताओं को उसने अपने वश में करके अपनी सेवा में नियुक्त किया। रामावतार धारण करके आपने सीता का हरण करने वाले उस रावण का लङ्का में वध किया था। वही रावण अब इस जन्म में शिशुपाल के रूप में पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ है। यह तो हिरण्यकशिपु और रावण से भी अधिक दुष्ट और भयंकर है ! आप इस दुष्ट का शीघ्र वध कीजिए। दुष्टों का वध करना और सज्जनों की रक्षा करना आपका परम पवित्र कर्तव्य है। शिशुपाल के वध के उपरान्त ही देवता लोग सुखपूर्वक रह सकेंगे"।

श्रीकृष्ण के द्वारा "ऐसा ही होगा" यह कहे जाने पर नारद जी आकाश की ओर प्रस्थान कर गये। श्रीकृष्ण जी शिशुपाल के वध का विचार करने लगे और क्रोध से उनकी भौहें तन गईं।

Scanned with CamScanner